दुरूद शरीफ़ 50

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है। सब तारीफ़े अल्लाह तआला के लिये हैं जो सारे जहानों का पालनहार है। हम उसी की तारीफ करते हैं और उसी से मदद और माफी चाहते हैं। अल्लाह की लातादाद सलामती, रहमतें और बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल. पर, आप की आल व औलाद और असहाब रज़ि. पर। व बअद!

दुरूद शरीफ़ का मतलब

अल्लाह तआला का नबी सल्लललाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजने का मतलब आप (सल्ल.) पर रहमत नाज़िल करना है और फ़रिश्तों व मुसलमानों का आप सल्ल. पर दुरूद भेजने का मतलब आप सल्ल. के लिए रहमत की दुआ करना है।

1.अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया ''तुम में से कोई शख़्स जब तक अपनी नमाज़ की जगह पर जहां उसने नमाज़ पढ़ी है, बैठा रहे और उसका वुज़ू न टूटे तब तक फ़रिश्तें उस पर दुरूद भेजते रहते हैं और यूं कहते हैं ''या अल्लाह! इसको बख़्श दे और इस पर रहम फ़रमा।'' (बुख़ारी–659, नसाई–736, अहमद–7424, इब्ने ख़ुज़ैमा–1490)

''सफ़ के दांई तरफ़ के लोगों पर अल्लाह रहमत नाज़िल करता है और फ़रिश्ते उनके लिए दुआ ए रहमत करते हैं।'' (अबुदाऊद–664, नसाई–814, इब्ने माजा–997–सही)

2. ''पहली सफ़ों के लोगों पर अल्लाह रहमत नाज़िल करता है और फ़रिश्तें दुआए रहमत करते हैं।'' (इब्ने माजा–1005)

3. ''नबी सल्ल. के अलावा किसी पर दुरूद न भेजो। अलबत्ता मुसलमान मर्दों व औरतों के लिए अस्तग़फार करो। (इस्माईल क़ाज़ी–फ़ज़ल सलात अलन्नबी)

दुरूद शरीफ़ की अहमियत

आप सल्ल. का इस्म मुबारक (नाम) सुनकर दुरूद न भेजने वाले के लिए जिब्रील अलैहि. ने बद दुआ की और आप सल्ल. ने ''आमीन' कही।

4. कअब बिन अजराह रज़ि. का बयान है कि एक दिन अल्लाह के रसूल सल्ल. मिम्बर की पहली सीढ़ी पर चढ़े तो फ़रमाया ''आमीन'' फिर दूसरी सीढ़ी पर चढ़े तो कहा ''आमीन'' फिर तीसरी सीढ़ी पर चढ़े तो फ़रमाया

''आमीन''।

खुत्बे के बाद आप सल्ल. ने फ़रमाया ''जिब्रील अलैहि. आए और कहा ''हलाकत है उस शख़्स के लिए जिसने रमज़ान का महीना पाया लेकिन अपने गुनाह न बख़्शवाए तो मैंने जवाबन कहा 'आमीन'। जब में दूसरी सीढ़ी पर चढ़ा तो जिब्रील अलैहि. ने कहा ''हलाकत है उस शख़्स के लिए जिसके सामने आप सल्ल. का नाम लिया जाए फिर वह आप सल्ल. पर दुरूद न भेजे तो मैंने जवाब में कहा 'आमीन' जब तीसरी सीढ़ी पर चढ़ा तो जिब्रील अलैहि. ने कहा 'हलाकत हो उस शख़्स के लिए जिसने अपने मां–बाप या दोनों में से किसी एक को बुढ़ापे की उम्र में पाया लेकिन उनकी ख़िदमत करके जन्नत हासिल न की तौ मैंने जवाब में कहा 'आमीन।' (मिश्कात–866, तिर्मिज़ी–3282)

5. अल्लाह के रसूल सल्ल. पर दुरूद न भेजने वाला कजूंस है। ''जिसके सामने मेरा नाम लिया जाए और वह दुरूद न पढ़े तो वह बख़ील है।'' (तिर्मिज़ी–3283–सही)

6. ''जिस मजलिस में लोग अल्लाह का ज़िक्र न करें और न नबी सल्ल. पर दुरूद भेजें। वह मजलिस क़यामत के दिन उन लोगों के लिए बाइसे हसरत होगी। चाहे नेक आमाल के बदले में जन्नत में चले जांए।'' (अहमद, सिलसिला अहादीस अल–सहीहा–76)

7. ''जो मुझ पर दुरूद पढ़ना भूल गया। उसने जन्न्त का रास्ता खो दिया।'' (इब्ने माजा–908–सही)

8. ''जब तक नबी सल्ल. पर दुरूद न पढ़ा जाए, कोई दुआ कुबूल नहीं की जाती।'' (सिलसिला अहादीस अल सहीहा–2035,तबरानी)

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत में आप सल्ल. की कई हदीसें मिलती हैं। जैसे

1. ''जिसने मुझ पर एक बार दुरूद भेजा। अल्लाह उस पर दस दफ़ा रहमतें नाज़िल करेगा। उसके दस गुनाह माफ़ करेगा और दस दर्जे बुलन्द करेगा।'' (नसाई–1300–सही)

2. ''जो शख़्स मुझे जितना ज़्यादा दुरूद भेजेगा। वह क़यामत के दिन मुझसे उतना ही क़रीब होगा। '' (मिश्कात–862–सही)

3. ''जिसने मुझ पर दुरूद भेजा या मेरे लिए अल्लाह से वसीला मांगा। उसके लिए मैं क़यामत के दिन ज़रूर सिफ़ारिश करूंगा।'' (इस्माईल क़ाज़ी सही)

4. जब अबि बिन कअब रज़ि. ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल.! में अपनी दुआ का सारा वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ने के लिए बक़्फ़ करता हूँ तो आप सल्ल. ने फ़रमाया ''यह तेरे सारे दुखों और ग़मो के लिए काफ़ी होगा

और तेरे गुनाहों की बख़्शिश का ज़रिया होगा।'' (मिश्कात–868–हसन)
5. ''अल्लाह तआला का फ़रमान है कि जो शख़्स आप (सल्ल.) पर दुरूद भेजेगा, मैं उस पर रहमत नाज़िल करूंगा और जो आप (सल्ल.) पर सलाम भेजेगा तो मैं भी उस पर सलाम भेजूगां।'' (अहमद, मिश्कात–875–सही)
6. ''जिसने दस दफ़ा सुबह और दस दफ़ा शाम के वक़्त मुझ पर दुरूद भेजा। क़यामत के दिन उसे मेरी सिफ़ारिश हासिल होगी।'' (तबरानी–हसन)
7. अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि. जब दुआ करने लगे तो पहले अल्लाह की हम्द व सना की। फिर नबी सल्ल. पर दुरूद भेजा। फिर इसके बाद अपने लिए दुआ की तो नबी सल्ल. ने फ़रमाया '' (इस तरह) अल्लाह से मांगों, जरूर दिये जाओंगे। फिर फ़रमाया ''अल्लाह से मांगों दिये जाओंगे।'' (तिर्मिज़ी–मिश्कात–870–हसन)
8. ''जिसने मुझ पर एक दफ़ा दुरूद भेजा। अल्लाह उस पर दस रहमतें नाज़िल करेगा।'' (मुस्लिम, मिश्कात–860)
9. '' अल्लाह तआला (मुझ पर) एक दफ़ा दुरूद पढ़ने वाले पर दस रहमतें नाज़िल करता है और एक दफ़ा सलाम भेजने वाले पर दस दफ़ा सलाम भेजता है।'' (नसाई–1286–हसन)
10. ''जिसने मुझ पर पर एक दफ़ा दुरूद भेजा। अल्लाह उसके नामा ए आमाल में दस नेकियां लिखेगा।'' (इस्माईल क़ाज़ी–सही)
11. ''जब तक कोई मुसलमान मुझ पर दुरूद भेजता रहता है। उस वक़्त तक फ़रिश्तें उसके लिए रहमत की दुआ करते रहते हैं। अब जो चाहे कम (दुरूद) पढ़े और जो चाहे ज़्यादा पढ़े।'' (इस्माईल क़ाज़ी–हसन)
हमारे लिए ध्यान देने वाली बात यह है कि अलग–अलग हदीस में दुरूद शरीफ़ पढ़ने का अज्र व सवाब अलग–अलग बताया गया है, जिसकी वजह पढ़ने वाले के खुलूस ईमान, तक्वे और नीयत पर है।

दुरूद शरीफ के मसनून अलफ़ाज़

1. '' अल्लाहुम्मा सल्ला अला मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मददिन कमा सल्लयता अला इब्राहीमा व अला आलि इब्राहीमा इन्न का हमीदुम मजीद। अल्लाहुम्मा बारिक अला मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारकता अला इब्राहीमा व अला आलि इब्राहीमा इन्न का हमीदुम मजीद।'' (ऐ अल्लाह! मुहम्मद सल्ल.) और आले मुहम्मद पर उसी तरह रहमत भेज जिस तरह तूने इब्राहीम अलैहि. और उनकी आल पर रहमत भेजी है। तारीफ़ व बुजुर्गी तेरे ही लिए है। ऐ अल्लाह! मुहम्मद (सल्ल.) और आले मुहम्मद पर उसी तरह बरकत नाज़िल फ़रमा। जिस तरह तूने इब्राहीम (अलैहि.) और उनकी आल पर बरकत नाज़िल की। तारीफ़ व बुजुर्गी तेरे ही लिये है। (बुख़ारी–3370, 6375)

2. ''अल्ला हुम्मा सल्ला अला मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लयता अला इब्राहीमा व बारिक अला मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारकता अला इब्राहीमा फ़िल आलमीना इन्नक हमीदुम मजीद।'' (ऐं अल्लाह! तमाम जहानों में मुहम्मद (सल्ल.) और आलि मुहम्मद पर उसी तरह रहमत नाज़िल फ़रमा जिस तरह तून आले इब्राहीम पर रहमत नाज़िल की (और) मुहम्मद (सल्ल.) और आले मुहम्मद पर उसी तरह बरकत नाज़िल फ़रमा। जिस तरह तूने आले इब्राहीम पर बरकत नाज़िल की। यक़ीनन तू बुजुर्ग और तारीफ़ वाला है।) (मुस्लिम–907)

3. ''अल्ला हुम्मा सल्ला अला मुहम्मदिन अब्दिका व रसूलिका कमा सल्लयता अला इब्राहीमा व बारिक अला मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारकता अला इब्राहीम।'' (या अल्लाह! अपने बन्दे और रसूल मुहम्मद (सल्ल.) पर उसी तरह से रहमतें नाज़िल फ़रमा जिस तरह तूने इब्राहिम अलैहि. सलाम पर नाज़िल फ़रमाई। मुहम्मद (सल्ल.) और आले मुहम्मद पर उसी तरह बरकतें नाज़िल फ़रमा जिस तरह तूने इब्राहीम (अलैहि.) पर नाज़िल की।) (बुख़ारी–4798, 6358)

4. ''अल्लाहुम्मा सल्ला अला मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लयता अला आलि इब्राहीमा इन्न का हमीदुम मजीद। अल्लाहुम्मा बारिक अला मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारकता अला आलि इब्राहीम इन्न का हमीदुम मजीद। '' (ऐ अल्लाह!) मुहम्मद (सल्ल.) और आले मुहम्मद पर उसी तरह रहमतें नाज़िल फ़रमा जिस तरह तूने इब्राहिम और आले इब्राहिम पर रहमतें नाज़िल की। बेशक तू बुजुर्ग व मेहमूद है। या अल्लाह! मुहम्मद (सल्ल.) और आले मुहम्मद पर उसी तरह बरकतें नाज़िल फ़रमा जिस तरह तूने आले इब्राहिम पर बरक़तें नाज़िल फ़रमाई। यक़ीनन तू बुजुर्ग व मेहमूद है।) (मुस्लिम–908)

5. '' अल्लाहुम्मा सल्ला अला मुहम्मदिन अब्दिका व रसूलिका कमा सल्लयता अला इब्राहीमा व बारिक अला मुहम्मदिन व आलि मुहम्मदिन कमा बारकता अला इब्राहीम।'' (ऐ अल्लाह!) अपने बन्दे और रसूल मुहम्मद (सल्ल.) उसी तरह रहमत नाज़िल फरमा। जिस तरह तूने इब्राहीम (अलैहि.) पर रहमत नाज़िल की। ऐ अल्लाह! मुहम्मद (सल्ल.) और आले मुहम्मद पर उसी तरह बरकतें नाज़िल फ़रमा। जिस तरह तूने इब्राहीम (अलैहि.) पर बरकतें नाज़िल की।) (नसाई–1296–सही)

6. '' अल्लाहुम्मा सल्ला अला मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मद।'' (ऐ अल्लाह! मुहम्मद (सल्ल.) और आले मुहम्मद पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमा।) (नसाई–1295)

रसूल सल्ल. पर सलाम भेजने के मसनून अलफ़ाज़

''अत्तय्यिहातु लिल्लाहि वस्सलावातु वततय्यिबातु अस्सलामु अलैका अय्युहन्न

बीयु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्ला हिस्सा लिहीन। अश्हदु अल्ला इलाहा इल्ललाहु व अशहदु अन्ना मुहम्मदन अबदुहु व रसूलुहू'' (मेरी ज़बानी, जिस्मानी और माली तमाम इबादात सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए हैं। ऐ नबी (सल्ल.) आप पर अल्लाह का सलाम उसकी रहमतें व बरकतें हो। हम पर भी और अल्लाह के सारे नेक बन्दों पर सलाम। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के अलावा कोई मअबूद नहीं और यह भी कि मुहम्मद (सल्ल.) अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं।) (बुख़ारी–831,835, नसाई–1165 से 1169, इब्ने माजा, 899, मुस्लिम–638)

दुरूद शरीफ़ पढ़ने के मौक़े

1. नमाज़ ख़त्म करने से पहले। (तश्हुद के बाद) (नसाई–1287, तिर्मिज़ी–3223, 3225–सही)

2. नमाज़े जनाज़ा में दूसरी तक्बीर के बाद। (मुसनद शाफ़ई–581)

3. अज़ान सुनने के बाद दुआ मांगने से पहले। (मुस्लिम–849, तिर्मिज़ी–3358)

4. ईमान वाले कहीं से भी और किसी भी वक्त दुरूद भेज सकते हैं–''मेरी क़ब्र को मेला न बनाओं और न ही अपने घरों को क़बिस्तान बनाओं। तुम जहां कहीं भी हो मुझ पर दुरूद भेजते रहो। तुम्हारा दुरूद मुझे पहुंचा दिया जाता है। (मुसनद अहमद–सही)

''अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत का सलाम मुझ तक पहुंचाने के लिए फ़रिश्ते मुक़र्रर कर रखें हैं, जो ज़मीन पर गश्त करते रहतें हैं। (नसाई–1285)

5. जुमे के दिन ''जुमे के दिन मुझ पर कसरत से दुरूद भेजा करो। वह मेरे सामने पेश किया जाता हैं।'' (बैंहक़ी, हाकिम–सही)

6. दुआ मांगने से पहले (अल्लाह की हम्द व सना के बाद) ''एक शख़्स ने नमाज़ पढ़ी। (नमाज़ के बाद) अल्लाह की हम्द व सना की और अपने नबी पर दुरूद भेजा तो आप सल्ल. ने फ़रमाया ''ऐ नमाज़ी! दुआ कर, तेरी दुआ कुबूल की जाएगी।'' (तिर्मिज़ी–3223–सही)

7.गुनाहों से तौबा करते वक्त़!

8. तक्लीफ़, मुसीबत व रंज व ग़म के मौक़े पर

जब उबई बिन कअब रज़ि. ने अल्लाह के रसूल सल्ल. से कहा कि मैं अपनी दुआ का सारा वक्त आप पर दुरूद भेजने के लिए वक्फ़ करता हूँ तो आप सल्ल. ने फ़रमाया ''यह तेरे गुनाहों की बख़्शिश का ज़रिया होगा।'' (तिर्मिज़ी–मिश्कात–868–हसन)

9. अल्लाह के रसूल सल्ल. का इस्में मुबारक सुनने पढ़ने या लिखने के वक्त। (तिर्मिज़ी–3283)

10. मस्जिद में दाखिल होते और मस्जिद से निकलते वक्त। (इब्ने माजा–771, 772–सही)

11. नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद। (अबु यअला–हसन)

12. हर मजलिस में। ' कुछ लोग मिल कर बैठें और अल्लाह का ज़िक्र न करें और न नबी सल्ल. पर दुरूद भेजें। तो क़यामत के दिन वह मजलिस उन लोगों के लिए व बाल की वजह होगी। अल्लाह चाहे तो उन्हें सज़ा दे या चाहे तो उन्हें माफ़ कर दें।'' (तिर्मिज़ी–3133–हसन)

13. सुबह व शाम में ''जिसने दस दफ़ा सुबह व दस दफ़ा शाम को मुझ पर दुरूद भेजा। उसे क़यामत के दिन मेरी सिफ़ारिश हासिल होगी।'' (तबरानी–हसन)

ग़ैर मसनून दुरूद व सलाम

दुरूदेताज, दुरूदें लक्खी, दुरूदे हज़ारा, दुरूदे मुकद्दस, दुरूदे अकबर, दुरूदे माही, दुरूदे तन्जीना, अहदनामा और दुआ ए गंज अल अर्श वग़ैरह! ये वो दुरूद, अज़कार व वज़ाइफ है जिनका अल्लाह की किताब या हदीसे रसूल सल्ल. में कोई ज़िक्र नहीं। ये सब खुद साख़्ता है, बाद में गढ़े गए हैं इनमें से कुछ भी आप सल्ल. से साबित नहीं।

कुछ ज़ईफ़ व मौज़ूअ रिवायात

1. ''जिसने जुमे के दिन अस्सी दफ़ा मुझ पर दुरूद भेजा। अल्लाह उसके अस्सी साल के गुनाह माफ़ कर देगा।'' (ख़तीब) यह रिवायत मौज़ूअ यानि गढ़ी हुई है। (सिलसिला अहादीस अल जईफ़ा वल मौज़ूआ–215)

2. '' जिसने हालते इस्लाम में हज किया। मेरी क़ब्र की ज़ियारत की और जिहाद किया। फिर बैतुल मक़्दिस में मुझ पर दुरूद भेजा। अल्लाह तआला उससे फ़राइज़ के बारे में सवाल न करेगा।'' (मौज़ूअ है। सिलसिला अहादीस–204)

3. '' नबी सल्ल. पर दुरूद भेजना, गुलाम आज़ाद करने से अफ़ज़ल है।'' (मौज़ूअ–मक़ासिद अल हुस्ना–630)

4. 'जिसने नबी (सल्ल.) पर दुरूद भेजे बिना वुज़ू किया उसका वुज़ु नहीं हुआ।'' (तबरानी–जईफ़)

5. '' तमाम आमाल में से कुछ को अल्लाह कुबूल करता है और कुछ कुबूल नहीं होते। लेकिन मुझ पर पढ़ा गया दुरूद हमेशा कुबूल होता है। अल्लाह उसे कभी रद्द नहीं करता। '' (ज़ईफ़–फ़वाइद अल मजमूआ फिल अहादीस मौज़ूआ–1031)

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमें अपने नबी मुहम्मद (सल्ल.) पर ज़्यादा से ज़्यादा दुरूद भेजने की तौफ़ीक़ दे और उन्हें हमारे लिए ज़ख़ीरा ए आखिरत बनाए। आमीन!

आपका दीनी भाई

मुहम्मद सईद

मो. 9214836639

9887239649

दिनांक 30/05/2012

माखूज़

दुरूद शरीफ़ के मसाइल

अज़–मुहम्मद इक़बाल जीलानी